Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 4, August-2023
ISSN No: 2583-8792

जन्माष्टमी : राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विविधता

सुरेन्द्र कुमार, पीएचडी शोधार्थी
हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

कृष्ण जन्माष्टमी, जिसे जन्माष्टमी वा गोकुलाष्टमी के रूप में भी जाना जाता है, एक वार्षिक हिंदू त्योहार है जो विष्णुजी के दशावतारों में से आठवें और चौबीस अवतारों में से बाईसवें अवतार श्रीकृष्ण के जन्म के आनन्दोत्सव के लिये मनाया जाता है।[1] यह हिंदू चंद्रमण वर्षपद के अनुसार, कृष्ण पक्ष (अंधेरे पखवाड़े) के आठवें दिन (अष्टमी) को भाद्रपद में मनाया जाता है। [2] जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के अगस्त व सितंबर के साथ अधिव्यापित होता है।[3]

1. विशेषता

यह एक महत्वपूर्ण त्यौहार है, विशेषकर हिन्दू धर्म की वैष्णव परम्परा में। भागवत पुराण (जैसे रास लीला वा कृष्ण लीला) के अनुसार कृष्ण के जीवन के नृत्य-नाटक की परम्परा, कृष्ण के जन्म के समय मध्यरात्रि में भक्ति गायन, उपवास (व्रत), रात्रि जागरण (रात्रि जागरण), और एक त्यौहार (महोत्सव) अगले दिन जन्माष्टमी समारोह का एक भाग हैं। [4]यह मणिपुर, असम, बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश तथा भारत के अन्य सभी राज्यों में पाए जाने वाले प्रमुख वैष्णव और निर्सांप्रदायिक समुदायों के साथ विशेष रूप से मथुरा और वृंदावन में मनाया जाता है[4]। कृष्ण जन्माष्टमी के उपरान्त त्योहार नंदोत्सव होता है, जो उस अवसर को मनाता है जब नंद बाबा ने जन्म के सम्मान में समुदाय को उपहार वितरित किए।

कृष्ण देवकी और वासुदेव आनकदुंदुभी के पुत्र हैं और उनके जन्मदिन को हिंदुओं द्वारा जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है, विशेष रूप से गौड़ीय वैष्णववाद परम्परा के रूप में उन्हें भगवान का सर्वोच्च व्यक्तित्व माना जाता है। हिंदू परंपरा के अनुसार माना जाता है कि जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण का जन्म मथुरा में भाद्रपद महीने के आठवें दिन (ग्रेगोरियन कैलेंडर में अगस्त और सितंबर के साथ अधिव्यपित) की आधी रात को हुआ था।[5]

कृष्ण का जन्म अराजकता के क्षेत्र में हुआ था। यह एक ऐसा समय था जब उत्पीड़न बड़े पैमाने पर था, स्वतंत्रता से वंचित किया गया था, बुराई सब ओर थी, और जब उनके मामा राजा कंस द्वारा उनके जीवन के लिए संकट था।

2. भगवान कृष्ण की महानता

श्री कृष्ण जी भगवान विष्णु जी के अवतार हैं, जो तीनों लोकों के तीन गुणों सतगुण, रजगुण तथा तमोगुण में से सतगुण विभाग के प्रभारी हैं।[6] भगवान का अवतार होने के कारण से श्रीकृष्ण जी में जन्म से ही सिद्धियां उपस्थित थी। उनके माता पिता वसुदेव और देवकी जी के विवाह के समय मामा कंस जब अपनी बहन देवकी को ससुराल पहुँचाने जा रहा था तभी आकाशवाणी हुई थी जिसमें बताया गया था कि देवकी का आठवां पुत्र कंस का अन्त करेगा अर्थात् यह होना

पहले से ही निश्चित था अतः वसुदेव और देवकी को कारागार में रखने पर भी कंस कृष्ण जी को नहीं समाप्त कर पाया।[6] मथुरा के बंदीगृह में जन्म के तुरंत उपरान्त, उनके पिता वसुदेव आनकदुन्दुभि कृष्ण को यमुना पार ले जाते हैं, जिससे बाल श्रीकृष्ण को गोकुल में नन्द और यशोदा को दिया जा सके।

जन्माष्टमी पर्व लोगों द्वारा उपवास रखकर, कृष्ण प्रेम के भक्ति गीत गाकर और रात्रि में जागरण करके मनाई जाती है। मध्यरात्रि के जन्म के उपरान्त, शिशु कृष्ण की मूर्तियों को धोया और पहनाया जाता है, फिर एक पालने में रखा जाता है। फिर भक्त भोजन और मिठाई बांटकर अपना उपवास पूरा करते हैं। महिलाएं अपने घर के द्वार और रसोई के बाहर छोटे-छोटे पैरों के चिन्ह बनाती हैं जो अपने घर की ओर चलते हुए, अपने घरों में श्रीकृष्ण जी के आने का प्रतीक माना जाता है।

3. समारोह

कुछ समुदाय कृष्ण की किंवदंतियों को माखन चोर के रूप में मनाते हैं। हिंदू जन्माष्टमी पर उपवास, भजन-गायन, सत्सङ्ग-कीर्तन, विशेष भोज-नैवेद्य बनाकर प्रसाद-भण्डारे के रूप में बाँटकर, रात्रि जागरण और कृष्ण मन्दिरों में जाकर मनाते हैं। प्रमुख मंदिरों में 'भागवत पुराण' और 'भगवद गीता' के पाठ का आयोजन होता हैं। कई समुदाय नृत्य-नाटक कार्यक्रम आयोजित करते हैं जिन्हें रास लीला वा कृष्ण लीला कहा जाता है। रास लीला की परम्परा विशेष रूप से मथुरा क्षेत्र में, भारत के पूर्वोत्तर राज्यों जैसे मणिपुर और असम में और राजस्थान और गुजरात के कुछ भागों में लोकप्रिय है। कृष्ण लीला में कलाकारों की कई दलों और टोलियों द्वारा अभिनय किया जाता है, उनके स्थानीय समुदायों द्वारा उत्साहित किया जाता है, और ये नाटक-नृत्य प्रत्येक जन्माष्टमी से कुछ दिन पहले आरम्भ हो जाते हैं।[7]

4. महाराष्ट्र

जन्माष्टमी (महाराष्ट्र में "गोकुलाष्टमी" के रूप में लोकप्रिय), नांदेड़ (गोपालचावड़ी, लिम्बगांव), मुंबई, लातूर, नागपुर और पुणे जैसे नगरों में मनाई जाती है। दही हांडी कृष्ण जन्माष्टमी के अगले दिन मनाई जाती है। यहां लोग दही हांडी को तोड़ते हैं जो इस त्योहार का एक भाग है। दही हांडी शब्द का शाब्दिक अर्थ है "दही से भरा मिट्टी का पात्र"। त्योहार को यह लोकप्रिय क्षेत्रीय नाम बाल कृष्ण की कथा से मिलता है। इसके अनुसार, वह अपने सखाओं सहित दही और मक्खन जैसे दुग्ध उत्पादों को ढूँढ कर और चुराकर बाँट देते। इसलिये लोग अपनी आपूर्ति को बालकों की पहुंच से बाहर छिपा देते थे। कृष्ण अपनी खोज में सभी ढंगों के रचनात्मक विचारों को आजमाते थे, जैसे कि अपने मित्रों के साथ इन ऊँचे लटकती हाँडियों को तोड़ने के लिए सूच्याकार-स्तम्भ बनातें। भगवान की यह लीला भारत भर में हिंदू मंदिरों के हस्तशिल्पों के साथ-साथ साहित्य और नृत्य-नाटक प्रदर्शित की जाती है, जो बालकों की आनंदमय भोलेपन का प्रतीक है, कि प्रेम और जीवन का खेल ईश्वर की अभिव्यक्ति है।[8]

महाराष्ट्र और भारत के अन्य पश्चिमी राज्यों में, इस कृष्ण कथा को जन्माष्टमी पर एक सामुदायिक परम्परा के रूप में निभाया जाता है, जहां दही की हाँडियों को ऊंचे डंडे से व किसी भवन के दूसरे/तीसरे स्तर से लटकी हुई रस्सियों से ऊपर लटका दिया जाता है। वार्षिक परम्परा के अनुसार, "गोविंदा" कहे जाने वाले युवाओं और लड़कों की टोलियाँ इन लटकते हुई हाँडियों के चारों ओर नृत्य और गायन करते हुए जाती हैं, एक दूसरे के ऊपर चढ़ती हैं और सूच्याकार-

स्तम्भ बनाती हैं, फिर बर्तन को तोड़ती हैं। गिराई गई सामग्री को प्रसाद (उत्सव प्रसाद) के रूप में माना जाता है। यह एक सार्वजनिक क्रिया है, एक सामुदायिक कार्यक्रम के रूप में उत्साहित और स्वागत किया जाता है।

समकालीन समय में, कई भारतीय नगर इस वार्षिक हिंदू अनुष्ठान को मनाते हैं। युवा समूह गोविंदा पाठक बनाते हैं, जो विशेष रूप से जन्माष्टमी पर पुरस्कार राशि के लिए एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। इन समूहों को मंडल व हांडी कहा जाता है और वे स्थानीय क्षेत्रों में घूमते हैं, प्रत्येक जन्माष्टमी पर अधिक से अधिक हाँडियाँ तोड़ने का प्रयास करते हैं। प्रतिष्ठित व्यक्ति और संचार माध्यम से जुड़े लोग भी उत्सव में भाग लेते हैं। गोविंदा टोलियों को उपहार और धन से पुरस्कृत किया जाता है, और टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार, 2014 में अकेले मुंबई में 4,000 से अधिक हांडी पुरस्कार वितरित किये गए थे, और गोविंदा की कई टोलियों ने भाग लिया था।[9]

5. गुजरात और राजस्थान

गुजरात के द्वारिका में लोग - जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना राज्य स्थापित किया था - दही हांडी के समान एक परम्परा के साथ त्योहार मनाते हैं, जिसे माखन हाँडी (शाब्दिक अर्थ: नवीन मथे गये मक्खन का पात्र) कहा जाता है। अन्य लोग मंदिरों में लोक नृत्य करते हैं, भजन गाते हैं, कृष्ण मंदिरों जैसे द्वारिकाधीश मन्दिर व नाथद्वारा मन्दिर जाते हैं। कच्छ मण्डल के क्षेत्र में, किसान अपनी बैलगाड़ियों को सजाते हैं और सामूहिक भजन गायन और नृत्य के साथ श्रीकृष्ण जीवन से सम्बन्धित प्रदर्शनी निकालते हैं। वैष्णव परम्परा के पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय के महान सन्त दयाराम की कवितायें और रचनाएँ, गुजरात और राजस्थान में जन्माष्टमी के नगरोत्सवों के समय विशेष रूप से लोकप्रिय हैं।[10]

6. उत्तरी भारत

जन्माष्टमी उत्तर भारत के ब्रज क्षेत्र में सबसे बड़ा त्योहार है, मथुरा जैसे नगरों में जहाँ श्री कृष्ण भगवान का जन्म हुआ था, और वृन्दावन में जहाँ वह पले-बड़े थे। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तराखण्ड, हिमाचल और पंजाब के सभी नगरों और गाँवों में जन्माष्टमी विशेष रूप से मनाते हैं। हिन्दू मन्दिरों को सजाया और जगमगाया जाता है जो दिन में कई आगन्तुकों को आकर्षित करते हैं। बहुत से कृष्ण भक्त भक्ति कार्यक्रम आयोजित करते हैं और रात्रि जागरण करते हैं।[11]भक्तजन मिठाई- प्रसाद आदि बाँटते हैं।[12] त्योहार सामान्य रूप से वर्षा ऋतु में पड़ता है जब ग्रामीण क्षेत्रों में खेत उपज से लदे होते है और ग्रामीण लोगों के पास हर्षोल्लास मनाने का बहुत समय होता है।

उत्तरी राज्यों में, जन्माष्टमी को रासलीला परम्परा के साथ मनाया जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "हर्षोल्लास का खेल (लीला), सार (रस)"। इसे जन्माष्टमी पर एकल व समूह नृत्य और नाटक कार्यक्रमों के रूप में व्यक्त किया जाता है, जिसमें कृष्ण से सम्बन्धित रचनाएँ गाई जाती हैं। कृष्ण के बालावस्था की नटखट लीलाओं और राधा-कृष्ण के प्रेम प्रसङ्ग विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। कुछ पाश्चत्य विद्वानों के अनुसार, यह राधा-कृष्ण प्रेम कहानियाँ दैवीय सिद्धान्त और वास्तविकता के लिए मानव आत्मा की लालसा और प्रेम के लिए हिन्दू प्रतीक हैं।[11] जम्मू में, छतों से पतङ्ग उड़ाना कृष्ण जन्माष्टमी पर उत्सव का एक भाग है।

Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 4, August-2023
ISSN No: 2583-8792

7. पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत

जन्माष्टमी व्यापक रूप से पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत के हिंदू वैष्णव समुदायों द्वारा मनाई जाती है। इन क्षेत्रों में कृष्ण जन्माष्टमी को मनाने की व्यापक परंपरा का श्रेय १५वीं और १६वीं शताब्दी के शंकरदेव और चैतन्य महाप्रभु के प्रयासों और शिक्षाओं को जाता है। उन्होंने दार्शनिक विचारों के साथ-साथ हिंदू भगवान कृष्ण को मनाने के लिए प्रदर्शन कला के नए रूप विकसित किए जैसे कि बोर्गेट, अंकिया नाट, सत्रिया और भक्ति योग, अब पश्चिम बंगाल और असम में लोकप्रिय हैं। आगे पूर्व में, मणिपुर के लोगों ने मणिपुरी नृत्य रूप विकसित किया, एक शास्त्रीय नृत्य रूप जो अपने हिंदू वैष्णववाद विषयों के लिए जाना जाता है, और जिसमें सत्रिया की तरह रासलीला नामक राधा-कृष्ण की प्रेम-प्रेरित नृत्य नाटक कला शामिल है। ये नृत्य नाट्य कलाएं इन क्षेत्रों में जन्माष्टमी परंपरा का एक हिस्सा हैं, और सभी शास्त्रीय भारतीय नृत्यों के साथ, प्राचीन हिंदू संस्कृत पाठ नाट्य शास्त्र में प्रासंगिक जड़ें हैं, लेकिन भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच संस्कृति संलयन से प्रभावित हैं।[13]

जन्माष्टमी पर, माता-पिता अपने बच्चों को कृष्ण की किंवदंतियों, जैसे कि गोपियों और कृष्ण के पात्रों के रूप में तैयार करते हैं। मंदिरों और सामुदायिक केंद्रों को क्षेत्रीय फूलों और पत्तियों से सजाया जाता है, जबकि समूह भागवत पुराण और भगवत गीता के दसवें अध्याय का पाठ करते या सुनते हैं। जन्माष्टमी मणिपुर में उपवास, सतर्कता, शास्त्रों के पाठ और कृष्ण प्रार्थना के साथ मनाया जाने वाला एक प्रमुख त्योहार है। मथुरा और वृंदावन में जन्माष्टमी के दौरान रासलीला करने वाले नर्तक एक उल्लेखनीय वार्षिक परंपरा है। मीतेई वैष्णव समुदाय में बच्चे लिकोल सन्नाबागेम खेलते हैं।[13]

8. ओड़िशा और पश्चिम बंगाल

पूर्वी राज्य ओड़िशा में (विशेष रूप से जगन्नाथ पुरी के आसपास के क्षेत्र) और पश्चिम बंगाल के नबद्वीप में, जनमाष्टमी के इस त्योहार को श्री कृष्ण जयंती व श्री जयंती के रूप में भी जाना जाता है। लोग आधी रात तक उपवास और पूजा कर जन्माष्टमी मनाते हैं। भागवत पुराण में श्रीकृष्ण जी के जीवन को समर्पित एक खंड, १०वें अध्याय को पढ़ा जाता है और अगले दिन को "नन्द उत्सव" के रूप में मनाया जाता है, जो श्रीकृष्ण के पालक माता-पिता नन्द और यशोदा के हर्ष के उत्सव का प्रतीक है। जन्माष्टमी के पूरे दिन भक्त उपवास रखते हैं। आधी रात को श्री राधा माधव के लिए एक भव्य अभिषेक किया जाता है। अभिषेक समारोह के समय गङ्गा जल से श्री राधा-माधव को स्नान कराया जाता है। 400 से अधिक वस्तुओं का भोजन (भोग) भक्ति के साथ श्री राधा-माधव अर्पित किया जाता है।[14]

9. दक्षिण भारत

गोकुला अष्टमी (जन्माष्टमी या श्री कृष्ण जयंती) कृष्ण का जन्मदिन मनाती है। गोकुलाष्टमी दक्षिण भारत में बहुत उत्साह के साथ मनाई जाती है। [३९] केरल में, लोग मलयालम कैलेंडर के अनुसार सितंबर को मनाते हैं। तमिलनाडु में, लोग फर्श को कोलम (चावल के घोल से तैयार सजावटी पैटर्न) से सजाते हैं। गीता गोविंदम और ऐसे ही अन्य भक्ति गीत कृष्ण की स्तुति में गाए जाते हैं। फिर वे घर की दहलीज से पूजा कक्ष तक कृष्ण के पैरों के निशान खींचते हैं, जो घर में कृष्ण के आगमन को दर्शाता है। भगवद्गीता का पाठ भी एक लोकप्रिय प्रथा है। कृष्ण को चढ़ाए जाने वाले प्रसाद में

फल, पान और मक्खन शामिल हैं। कृष्ण की पसंदीदा मानी जाने वाली सेवइयां बड़ी सावधानी से तैयार की जाती हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण हैं सीदाई, मीठी सीदाई, वेरकादलाई उरुंडई। यह त्योहार शाम को मनाया जाता है क्योंकि कृष्ण का जन्म मध्यरात्रि में हुआ था। ज्यादातर लोग इस दिन सख्त उपवास रखते हैं और आधी रात की पूजा के बाद ही भोजन करते हैं।

आंध्र प्रदेश में, श्लोकों और भक्ति गीतों का पाठ इस त्योहार की विशेषता है। इस त्यौहार की एक और अनूठी विशेषता यह है कि युवा लड़के कृष्ण के रूप में तैयार होते हैं और वे पड़ोसियों और दोस्तों से मिलते हैं। विभिन्न प्रकार के फल और मिठाइयाँ सबसे पहले कृष्ण को अर्पित की जाती हैं और पूजा के बाद इन मिठाइयों को आगंतुकों के बीच वितरित किया जाता है। आंध्र प्रदेश के लोग भी उपवास रखते हैं। इस दिन गोकुलनंदन को चढ़ाने के लिए तरह-तरह की मिठाइयां बनाई जाती हैं। कृष्ण के लिए प्रसाद बनाने के लिए दूध और दही के साथ खाने की चीजें तैयार की जाती हैं। राज्य के कुछ मंदिरों में कृष्ण के नाम का आनंदपूर्वक जप होता है। कृष्ण को समर्पित मंदिरों की संख्या कम है। इसका कारण यह है कि मूर्तियों के बजाय चित्रों के माध्यम से उनकी पूजा की जाती है।

कृष्ण को समर्पित लोकप्रिय दक्षिण भारतीय मंदिर हैं, तिरुवरुर जिले के मन्नारगुडी में राजगोपालस्वामी मंदिर, कांचीपुरम में पांडवधूथर मंदिर, उडुपी में श्री कृष्ण मंदिर और गुरुवायुर में कृष्ण मंदिर विष्णु के कृष्ण अवतार की स्मृति को समर्पित हैं। किंवदंती कहती है कि गुरुवायुर में स्थापित श्री कृष्ण की मूर्ति द्वारका की है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह समुद्र में डूबी हुई थी।[14]

10.उत्तराखंड में जन्माष्टमी का महोत्सव

अपने पारम्परिक रीति रिवाजों द्वारा उत्तराखंड में जन्माष्टमी का उत्सव बड़े ही जोर शोर के साथ मनाया जाता है। केवल बड़ों के द्वारा ही नहीं बल्कि बच्चों द्वारा भी यह पर्व बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। आज के दिन की शुरुवात सभी लोग सुबह स्नान करके नए कपड़ें पहन कर करते है। परम्परा के अनुसार सभी लोग अपने से बड़े का पैर छू कर आशीर्वाद प्राप्त करते है। उसके बाद पहले घर पर भगवान श्री कृष्ण की पूजा की जाती है और साथ अन्य देवी देवताओं की भी पूजा की जाती है। बाजारों में आज के दिन तरह तरह के फल आ जाते है सभी एक दिन पहले ही प्रसाद के रूप में फल खरीद लेते है

11.भारत के बाहर

क) नेपाल : नेपाल की लगभग अस्सी प्रतिशत आबादी खुद को हिंदू के रूप में पहचानती है और कृष्ण जन्माष्टमी मनाती है। वे आधी रात तक उपवास करके जन्माष्टमी मनाते हैं। भक्त भगवद गीता का पाठ करते हैं और भजन और कीर्तन करते हैं। कृष्ण के मंदिरों को सजाया जाता है। दुकानों, पोस्टरों और घरों में कृष्ण के रूपांकन दिखते हैं।[15]

ख) बांग्लादेश: जन्माष्टमी बांग्लादेश में एक राष्ट्रीय अवकाश है। जन्माष्टमी पर, बांग्लादेश के राष्ट्रीय मंदिर, ढाकेश्वरी मंदिर ढाका से एक जुलूस शुरू होता है, और फिर पुराने ढाका की सड़कों से आगे बढ़ता है। जुलूस 1902 का है, लेकिन 1948 में रोक दिया गया था। जुलूस 1989 में फिर से शुरू किया गया था।[16]

ग) फ़िजी: फिजी में कम से कम एक चौथाई आबादी हिंदू धर्म का पालन करती है, और यह अवकाश फिजी में तब से मनाया जाता है जब से पहले भारतीय गिरमिटिया मजदूर वहां पहुंचे थे। फिजी में जन्माष्टमी को "कृष्णा अष्टमी" के रूप में जाना जाता है। फ़िजी में अधिकांश हिंदुओं के पूर्वज उत्तर प्रदेश, बिहार और तमिलनाडु से उत्पन्न हुए हैं, जिससे यह उनके लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण त्योहार है। फिजी का जन्माष्टमी उत्सव इस मायने में अनोखा है कि वे आठ दिनों तक चलते हैं। इन आठ दिनों के दौरान, हिंदू घरों और मंदिरों में लोग अपनी 'मंडलियों' या भक्ति समूहों के साथ शाम और रात में इकट्ठा होते हैं, और भागवत पुराण का पाठ करते हैं, कृष्ण के लिए भक्ति गीत गाते हैं, और प्रसाद वितरित करते हैं।[17]

घ) रीयूनियन: फ्रांसीसी द्वीप रीयूनियन के मालबारों में, कैथोलिक और हिंदू धर्म का एक समन्वय विकसित हो सकता है। जन्माष्टमी को ईसा मसीह की जन्म तिथि माना जाता है।[17]

ड़) अन्य: एरिज़ोना, संयुक्त राज्य अमेरिका में, गवर्नर जेनेट नेपोलिटानो इस्कॉन को स्वीकार करते हुए जन्माष्टमी पर संदेश देने वाले पहले अमेरिकी नेता थे। यह त्योहार कैरिबियन में गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, जमैका और पूर्व ब्रिटिश उपनिवेश फिजी के साथ-साथ सूरीनाम के पूर्व डच उपनिवेश में हिंदुओं द्वारा व्यापक रूप से मनाया जाता है। इन देशों में बहुत से हिंदू तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और बिहार से आते हैं; जो तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और उड़ीसा के गिरमिटिया प्रवासियों के वंशज होते है।

12.संदर्भ

[1]. "Janmashtami | Celebration, Date, India, & Facts". Encyclopedia Britannica (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2021-08-25.

[2]. Lochtefeld, James G. (2002). The illustrated encyclopedia of Hinduism. Internet Archive. New York : Rosen. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-8239-2287-1.

[3]. "Shree Krishna Janmashtami 2021: इन अद्भुत संयोग में मनाया जाएगा जन्माष्टमी का त्योहार, जानिए पूजन का अभिजीत मुहूर्त". Hindustan (hindi में). अभिगमन तिथि 2021-08-25.

[4]. Bryant, Edwin Francis (2007). Krishna: A Sourcebook (अंग्रेज़ी में). Oxford University Press. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-19-803400-1.

[5]. "Krishna Janamashtami 2021: What is it and why do Indians celebrate it?". The Financial Express (अंग्रेज़ी में). 2021-08-24. अभिगमन तिथि 2021-08-25.

[6]. "Krishna Janmashtami in Hindi: जन्माष्टमी पर जानें कृष्ण जी से जुड़े अद्भुत रहस्य". SA News Channel (अंग्रेज़ी में). 2021-08-24. अभिगमन तिथि 2021-08-25.

[7]. Bryant, Edwin Francis (2007). Krishna: A Sourcebook (अंग्रेज़ी में). Oxford University Press. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-19-803400-1.

[8]. Desk, India com Hindi News. "Dahi Handi 2020: कृष्ण जन्माष्टमी पर जानें क्या है दही हांडी का महत्व, ये है शुभ मुहूर्त". India News, Breaking News | India.com. अभिगमन तिथि 2021-08-25.

[9]. Mishra, Ambarish; Yeshwantrao, Nitin; Aug 11, Bella Jaisinghani / TNN / Updated:; 2012; Ist, 02:49. "Nine-tier handi breaks into Guinness Records | Mumbai News - Times of India". The Times of India (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2021-08-21.

[10]. Dwyer, Rachel (2001). The Poetics of Devotion: The Gujarati Lyrics of Dayaram (अंग्रेज़ी में). Psychology Press. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-7007-1233-5.

[11]. http://aajtak.intoday.in/story/how-to-do-krishna-janmashtami-pooja-1-884151.html Archived 2017-03-27 at the Wayback Machine जन्माष्टमी पूजा विधि

[12]. Kishore, B. R. (2001). Hinduism (अंग्रेज़ी में). Diamond Pocket Books (P) Ltd. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-7182-073-3.

[13]. Doshi, Saryu (1989). Dances of Manipur: The Classical Tradition (अंग्रेज़ी में). Marg Publications. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-85026-09-1.

[14]. Mukherjee, Prabhat (1981). The History of Medieval Vaishnavism in Orissa (अंग्रेज़ी में). Asian Educational Services. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-206-0229-8.

[15]. "Janmashtami in Nepal: Devotees throng magnificent Krishna Temple". ANI News (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2021-08-29.

[16]. "Hinduism Today - Authentic resources for a billion-strong religion in renaissance". Hinduism Today (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2021-08-23.

[17]. "Hindus Mark Birth Of Lord Krishna" (अंग्रेज़ी में) अभिगमन तिथि 2021-08-24.